



Purna International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class -X

HINDI

JUNE Month

2020

p´-wag

pa#-Ö

mnÿyta-mE4I lxr` gRt

Ö-xBda4R

Ö-pa# ka sar:

Ö-wva4R

Ö-pXn-]Ttr:

x-wav Sp*3 kir0:

Ø-Vyakr` -vaKy

p´ -wag
pa#-Ö
mntyta-mE4I lxr` glt

p-kiv mE4I lxr` glt:-

1886 में झाँसी के करीब चिरगाँव में जन्मे मैथिलीशरण गुप्त अपने जीवनकाल में ही राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए। इनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। संस्कृत, बांग्ला, मराठी और अंग्रेज़ी पर इनका समान अधिकार था।

गुप्त जी रामभक्त कवि हैं। राम का कीर्तिगान इनकी चिरसंचित अभिलाषा रही। इन्होंने भारतीय जीवन को समग्रता में समझने और प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया।

गुप्त जी की कविता की भाषा विशुद्ध खड़ी बोली है। भाषा पर संस्कृत का प्रभाव है। काव्य की कथावस्तु भारतीय इतिहास के ऐसे अंशों से ली गई है जो भारत के अतीत का स्वर्ण चित्र पाठक के सामने उपस्थित करते हैं।

गुप्त जी की प्रमुख कृतियाँ हैं—साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वधा।

गुप्त जी के पिता सेठ रामचरण दास भी कवि थे और इनके छोटे भाई सियारामशरण गुप्त भी प्रसिद्ध कवि हुए।

p-xBda4R

| | |
|----------------------------|---------------------------|
| mTyRmr` xII |]dar-danxII |
| kta4RAawarI | klitRyx |
| kJtI-m2u Aavaj | 9QatRwdj seIyakU |
| krS4-ha4 sepkDa hAa | d2Icl-0k 1i8R |
| pra4Rj o dBrekeil 0 ho | AiS4j al -hDIDyo. ka smbI |
| i9tIx-raj a | Svmas-Apna mas |
| mhaivwt-bhth bDI pJI | vxIKr` -vx mekrna |
| prSpravl b-0k dBreka shara | .Apk-kl k riht |
| prha` wt-sa9I | AwI*3-[iC7t |
| AtkRibna tkRse | stkRp4-sav2an ya5a |

p-pa# ka Sp*3IKr` :-

प्रकृति के अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में सोचने की शक्ति अधिक होती है। वह अपने ही नहीं दूसरों के सुख - दुःख का भी ख्याल रखता है और दूसरों के लिए कुछ करने में समर्थ होता है। जानवर जब चरागाह में जाते हैं तो केवल अपने लिए चर कर

आते हैं, परन्तु मनुष्य ऐसा नहीं है। वह जो कुछ भी कमाता है ,जो कुछ भी बनाता है ,वह दूसरों के लिए भी करता है और दूसरों की सहायता से भी करता है।

प्रस्तुत पाठ का कवि अपनों के सुख - दुःख की चिंता करने वालों को मनुष्य तो मानता है परन्तु यह मानने को तैयार नहीं है कि उन मनुष्यों में मनुष्यता के सारे गुण होते हैं। कवि केवल उन मनुष्यों को महान मानता है जो अपनों के सुख - दुःख से पहले दूसरों की चिंता करते हैं। वह मनुष्यों में ऐसे गुण चाहता है जिसके कारण कोई भी मनुष्य इस मृत्युलोक से चले जाने के बाद भी सदियों तक दूसरों की यादों में रहता है अर्थात् वह मृत्यु के बाद भी अमर रहता है।

*-पाठ सार:-

इस कविता में कवि मनुष्यता का सही अर्थ समझाने का प्रयास कर रहा है। पहले भाग में कवि कहता है कि मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है पर हमें ऐसा कुछ करना चाहिए कि लोग हमें मृत्यु के बाद भी याद रखें। असली मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीना व मरना सीख ले। दूसरे भाग में कवि कहता है कि हमें उदार बनना चाहिए क्योंकि उदार मनुष्यों का हर जगह गुण गान होता है। मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों की चिंता करे। तीसरे भाग में कवि कहता है कि पुराणों में उन लोगों के बहुत उदाहरण हैं जिन्हें उनकी त्याग भाव के लिए आज भी याद किया जाता है। सच्चा मनुष्य वही है जो त्याग भाव जान ले। चौथे भाग में कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया और करुणा का भाव होना चाहिए, मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए मरता और जीता है। पांचवें भाग में कवि कहना चाहता है कि यहाँ कोई अनाथ नहीं है क्योंकि हम सब उस एक ईश्वर की संतान हैं। हमें भेदभाव से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए। छठे भाग में कवि कहना चाहता है कि हमें दयालु बनना चाहिए क्योंकि दयालु और परोपकारी मनुष्यों का देवता भी स्वागत करते हैं। अतः हमें दूसरों का परोपकार व कल्याण करना चाहिए। सातवें भाग में कवि कहता है कि मनुष्यों के बाहरी कर्म अलग अलग हो परन्तु हमारे वेद साक्षी है की सभी की आत्मा एक है ,हम सब एक ही ईश्वर की संतान है अतः सभी मनुष्य भाई -बंधु हैं और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आये। अंतिम भाग में कवि कहना चाहता है कि विपत्ति और विघ्न को हटाते हुए मनुष्य को अपने चुने हुए रास्तों पर चलना चाहिए ,आपसी समझ को बनाये रखना चाहिए और भेदभाव को नहीं बढ़ाना चाहिए ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है।

p-wava4Rव्याख्या

1-विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मारा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु- प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि बताना चाहता है कि मनुष्यों को कैसा जीवन जीना चाहिए।

व्याख्या -: कवि कहता है कि हमें यह जान लेना चाहिए कि मृत्यु का होना निश्चित है, हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। कवि कहता है कि हमें कुछ ऐसा करना चाहिए कि लोग हमें मरने के बाद भी याद रखे। जो मनुष्य दूसरों के लिए कुछ भी ना कर सके, उनका जीना और मरना दोनों बेकार है। मर कर भी वह मनुष्य कभी नहीं मरता जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है, क्योंकि अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। कवि के अनुसार मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों के लिए मरे अर्थात् जो मनुष्य दूसरों की चिंता करे वही असली मनुष्य कहलाता है।

2-उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।

उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि बताना चाहता है कि जो मनुष्य दूसरों के लिए जीते हैं उनका गुणगान युगों - युगों तक किया जाता है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में दूसरों की चिंता करता है उस महान व्यक्ति की कथा का गुण गान सरस्वती अर्थात् पुस्तकों में किया जाता है।

पूरी धरती उस महान व्यक्ति की आभारी रहती है। उस व्यक्ति की बातचीत हमेशा जीवित व्यक्ति की तरह की जाती है और पूरी सृष्टि उसकी पूजा करती है। कवि कहता है कि जो व्यक्ति पूरे संसार को अखण्ड भाव और भाईचारे की भावना में बाँधता है वह व्यक्ति सही मायने में मनुष्य कहलाने योग्य होता है।

3-क्षुधार्त रतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,

तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।

उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,

सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।

अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि ने महान पुरुषों के उदाहरण दिए हैं जिनकी महानता के कारण उन्हें याद किया जाता है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि पौराणिक कथाएं ऐसे व्यक्तियों के उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए त्याग दिया जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। भूख से परेशान रतिदेव ने अपने हाथ की आखरी थाली भी दान कर दी थी और महर्षि दधीचि ने तो अपने पूरे शरीर की हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए दान कर दी थी। उशीनर देश के राजा शिबि ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपना पूरा मांस दान कर दिया था। वीर कर्ण ने अपनी खुशी से अपने शरीर का कवच दान कर दिया था। कवि कहना चाहता है कि मनुष्य इस नश्वर शरीर के लिए क्यों डरता है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए अपने आप को त्याग देता है।

4-सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;

वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।

विरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,

विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

अहा ! वही उदार है परोपकार जो करे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि ने महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए दया, करुणा को सबसे बड़ा धन बताया है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए ,यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं । इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। महान उस को कहा जाता है जो परोपकार करता है वही मनुष्य ,मनुष्य कहलाता है जो मनुष्यों के लिए जीता है और मरता है।

5-रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वित्त में,

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,

दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।

अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि सम्पत्ति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और किसी को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबके साथ हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है। कवि कहता है कि वह व्यक्ति भाग्यहीन है जो इस प्रकार का उतावलापन रखता है क्योंकि मनुष्य वही व्यक्ति कहलाता है जो इन सब चीजों से ऊपर उठ कर सोचता है।

6-अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,

समक्ष ही स्वबाहू जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।

परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,

अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।

रहो न यां कि एक से न काम और का सरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि कलंक रहित रहने व दूसरों का सहारा बनने वाले मवषयों का देवता भी स्वागत करते हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि उस कभी न समाप्त होने वाले आकाश में असंख्य देवता खड़े हैं, जो परोपकारी व दयालु मनुष्यों का सामने से खड़े होकर अपनी भुजाओं को फैलाकर स्वागत करते हैं। इसलिए दूसरों का सहारा बनो और सभी को साथ में लेकर आगे बढ़ो। कवि कहता है कि सभी कलंक रहित हो कर देवताओं की गोद में बैठो अर्थात् यदि कोई बुरा काम नहीं करोगे तो देवता तुम्हें अपनी गोद में ले लेंगे। अपने मतलब के लिए नहीं जीना चाहिए अपना और दूसरों का कल्याण व उद्धार करना चाहिए क्योंकि इस मरणशील संसार में मनुष्य वही है जो मनुष्यों का कल्याण करे व परोपकार करे।

7-'मनुष्य मात्रा बन्धु हैं' यही बड़ा विवेक है,

पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।

फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,

परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।

अनर्थ है कि बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि हम सब एक ईश्वर की संतान हैं। अतः हम सभी मनुष्य एक - दूसरे के भाई - बन्धु हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे के भाई - बन्धु हैं। यह सबसे बड़ी समझ है। पुराणों में जिसे स्वयं उत्पन्न पुरुष मना गया है, वह परमात्मा या ईश्वर हम सभी का पिता है, अर्थात् सभी मनुष्य उस एक ईश्वर की संतान हैं। बाहरी कारणों के फल अनुसार प्रत्येक मनुष्य के कर्म भले ही अलग अलग हों परन्तु हमारे वेद इस बात के साक्षी है कि सभी की आत्मा एक है। कवि कहता है कि यदि भाई ही भाई के दुःख व कष्टों का नाश नहीं करेगा तो उसका जीना व्यर्थ है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो बुरे समय में दूसरे मनुष्यों के काम आता है।

8-चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,

विपत्ति,विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।

घटे न हेलमेल हों, बढ़े न भिन्नता कभी,

अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

प्रसंग - : प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि यदि हम खुशी से, सारे कष्टों को हटते हुए, भेदभाव रहित रहेंगे तभी संभव है कि समाज की उन्नति होगी।

व्याख्या - : कवि कहता है कि मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में खुशी खुशी चलना चाहिए, रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये, उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बढ़े। बिना किसी तर्क वितर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा कि मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद्धि भी कायम करे

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये -

1-कवि ने कैसी मृत्यु को समृत्यु कहा है?

1-कवि ने ऐसी मृत्यु को समृत्यु कहा है जिसमें मनुष्य अपने से पहले दूसरे की चिंता करता है और परोपकार की राह को चुनता है जिससे उसे मरने के बाद भी याद किया जाता है।

2-उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

2- उदार व्यक्ति परोपकारी होता है, वह अपने से पहले दूसरों की चिंता करता है और लोक कल्याण के लिए अपना जीवन त्याग देता है।

3-कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता' के लिए क्या उदाहरण दिया है?

3- कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता' के लिए यह सन्देश दिया है कि परोपकार करने वाला ही असली मनुष्य कहलाने योग्य होता है। मानवता की रक्षा के लिए दधीचि ने अपने शरीर की सारी अस्थियां दान कर दी थी, कर्ण ने अपनी जान की परवाह किये बिना अपना कवच दे दिया था जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। कवि इन उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

4- कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व - रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

4- कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में गर्व रहित जीवन व्यतीत करने की बात कही है:-
रहो न भूल के कभी मगांघ तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अर्थात् सम्पत्ति के घमंड में कभी नहीं रहना चाहिए और न ही इस बात पर गर्व करना चाहिए कि आपके पास आपके अपनों का साथ है क्योंकि इस दुनिया में कोई भी अनाथ नहीं है सब उस परम पिता परमेश्वर की संतान हैं।

5- मनुष्य मात्र बन्धु है ' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

5- मनुष्य मात्र बन्धु है ' अर्थात् हम सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं अतः हम सब भाई - बन्धु हैं। भाई -बन्धु होने के नाते हमें भाईचारे के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का बुरे समय में साथ देना चाहिए।

6- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

6- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है ताकि आपसी समझ न बिगड़े और न ही भेदभाव बड़े। सब एक साथ एक होकर चलेंगे तो सारी बाधाएं मिट जाएगी और सबका कल्याण और समृद्धि होगी।

7- व्यक्ति को किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए ? इस कविता के आधार पर लिखिए।

7-मनुष्य को परोपकार का जीवन जीना चाहिए ,अपने से पहले दूसरों के दुखों की चिंता करनी चाहिए। केवल अपने बारे में तो जानवर भी सोचते हैं, कवि के अनुसार मनुष्य वही कहलाता है जो अपने से पहले दूसरों की चिंता करे।

8-' मनुष्यता ' कविता के द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है ?

8- 'मनुष्यता ' कविता के माध्यम से कवि यह सन्देश देना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है। परोपकार ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम युगों तक लोगो के दिल में अपनी जगह बना सकते हैं और परोपकार के द्वारा ही समाज का कल्याण व समृद्धि संभव है। अतः हमें परोपकारी बनना चाहिए ताकि हम सही मायने में मनुष्य कहलाये।

Vyākṛ̣ :-

पदबंध:- परिभाषा

पद- वाक्य से अलग रहने पर 'शब्द' और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में- वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है। **पदबंध-** जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें **पदबंध** कहते हैं।

पदबंध के भेद

मुख्य पद के आधार पर पदबंध के पाँच प्रकार होते हैं-

- | | |
|-------------------|------------------|
| (1) संज्ञा-पदबंध | (2) विशेषण-पदबंध |
| (3) सर्वनाम पदबंध | (4) क्रिया पदबंध |
| (5) अव्यय पदबंध | |

(1) संज्ञा-पदबंध-

- चार ताकतवर मजदूर इस भारी चीज को उठा पाए।
- राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।
- अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।
- आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।

2) विशेषण पदबंध-

- तेज चलने वाली गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।
- उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।
- उसका घोड़ा अत्यंत सुंदर, फुरतीला और आजकारी है।
- बरगद और पीपल की घनी छाँव से हमें बहुत सुख मिला।

3) सर्वनाम पदबंध-

- बिजली-सी फुरती दिखाकर आपने बालक को डूबने से बचा लिया।
- शरारत करने वाले छात्रों में से कुछ पकड़े गए।
- विरोध करने वाले लोगों में से कोई नहीं बोला।

4) क्रिया पदबंध-

- (a) वह बाजार की ओर आया होगा।
- (b) मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।
- (c) सुरेश नदी में डूब गया।
- (d) अब दरवाजा खोला जा सकता है।

5) अव्यय पदबंध-

- (a) अपने सामान के साथ वह चला गया।
- (b) सुबह से शाम तक वह बैठा रहा।

किसी भी भाषा के वे शब्द अव्यय (Indeclinable या inflexible) कहलाते हैं जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता। ... चूँकि अव्यय का रूपान्तर नहीं होता, इसलिए ऐसे शब्द अविकारी होते हैं। अव्यय का शाब्दिक अर्थ है- 'जो व्यय न हो।'

(i) कालवाचक अव्यय- इनमें समय का बोध होता है। जैसे- आज, कल, तुरन्त, पीछे, पहले, अब, जब, तब, कभी-कभी, कब, अब से, नित्य, जब से, सदा से, अभी, तभी, आजकल और कभी।
उदाहरणार्थ-

अब से ऐसी बात नहीं होगी।
ऐसी बात सदा से होती रही है।
वह कब आया, मुझे पता नहीं।

(ii) स्थानवाचक अव्यय- इससे स्थान का बोध होता है। जैसे- यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, यहाँ से, वहाँ से, इधर-उधर। उदाहरणार्थ-

वह यहाँ नहीं है।
वह कहाँ जायेगा ?
वहाँ कोई नहीं है।
जहाँ तुम हो, वहाँ मैं हूँ।

(iii) दिशावाचक अव्यय- इससे दिशा का बोध होता है। जैसे- इधर, उधर, जिधर, दूर, परे, अलग, दाहिने, बाएँ, आरपार।

(iv) स्थितिवाचक अव्यय- नीचे, ऊपर, तले, सामने, बाहर, भीतर इत्यादि।

अव्यय के भेद

अव्यय निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं -

- (1) क्रियाविशेषण (Adverb)
- (2) संबंधबोधक (Preposition)
- (3) समुच्चयबोधक (Conjunction)
- (4) विस्मयादिबोधक (Interjection)

(1) क्रियाविशेषण :- जिन शब्दों से क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

जैसे- राम धीरे-धीरे टहलता है; राम वहाँ टहलता है; राम अभी टहलता है।

इन वाक्यों में 'धीरे-धीरे', 'वहाँ' और 'अभी' राम के 'टहलने' (क्रिया) की विशेषता बतलाते हैं। ये क्रियाविशेषण अविकारी विशेषण भी कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण की भी विशेषता बताता है।

वह बहुत धीरे चलता है। इस वाक्य में 'बहुत' क्रियाविशेषण है; क्योंकि यह दूसरे क्रियाविशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है।

क्रिया विशेषण के प्रकार

- (1) प्रयोग के अनुसार- (i) साधारण (ii) संयोजक (iii) अनुबद्ध
- (2) रूप के अनुसार- (i) मूल क्रियाविशेषण (ii) यौगिक क्रियाविशेषण (iii) स्थानीय क्रियाविशेषण
- (3) अर्थ के अनुसार- (i) परिमाणवाचक (ii) रीतिवाचक

(1) 'प्रयोग' के अनुसार क्रियाविशेषण के भेद

प्रयोग के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन भेद हैं-

(i) साधारण क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों का प्रयोग किसी वाक्य में स्वतन्त्र होता है, उन्हें 'साधारण क्रियाविशेषण' कहा जाता है।

जैसे- हाय! अब मैं क्या करूँ? बेटा, जल्दी आओ। अरे ! साँप कहाँ गया ?

(ii) संयोजक क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों का सम्बन्ध किसी उपवाक्य से रहता है, उन्हें 'संयोजक क्रियाविशेषण' कहा जाता है।

जैसे- जब रोहिताश्व ही नहीं, तो मैं ही जीकर क्या करूँगी ! जहाँ अभी समुद्र है, वहाँ किसी समय जंगल था।

(iii) **अनुबद्ध क्रियाविशेषण**- जिन क्रियाविशेषणों के प्रयोग अवधारण (निश्चय) के लिए किसी भी शब्दभेद के साथ होता हो, उन्हें 'अनुबद्ध क्रियाविशेषण' कहा जाता है।
जैसे- यह तो किसी ने धोखा ही दिया है। मैंने उसे देखा तक नहीं।

(2) रूप के अनुसार क्रियाविशेषण के भेद

रूप के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन भेद हैं-

(i) **मूल क्रियाविशेषण**- ऐसे क्रियाविशेषण, जो किसी दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते, 'मूल क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- ठीक, दूर, अचानक, फिर, नहीं।

(ii) **यौगिक क्रियाविशेषण**- ऐसे क्रियाविशेषण, जो किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय या पद जोड़ने पर बनते हैं, 'यौगिक क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- मन से, जिससे, चुपके से, भूल से, देखते हुए, यहाँ तक, झट से, वहाँ पर। यौगिक क्रियाविशेषण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, धातु और अव्यय के मेल से बनते हैं।

यौगिक क्रियाविशेषण नीचे लिखे शब्दों के मेल से बनते हैं-

(i) **संज्ञाओं की द्विरुक्ति से**- घर-घर, घड़ी-घड़ी, बीच-बीच, हाथों-हाथ।

(ii) **दो भिन्न संज्ञाओं के मेल से**- दिन-रात, साँझ-सबरे, घर-बाहर, देश-विदेश।

(iii) **विशेषणों की द्विरुक्ति से**- एक-एक, ठीक-ठीक, साफ-साफ।

(iv) **क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति से**- धीरे-धीरे, जहाँ-तहाँ, कब-कब, कहाँ-कहाँ।

(v) **दो क्रियाविशेषणों के मेल से**- जहाँ-तहाँ, जहाँ-कहीं, जब-तब, जब-कभी, कल-परसों, आस-पास।

(vi) **दो भिन्न या समान क्रियाविशेषणों के बीच 'न' लगाने से**- कभी-न-कभी, कुछ-न-कुछ।

(vii) **अनुकरण वाचक शब्दों की द्विरुक्ति से**- पटपट, तड़तड़, सटासट, धड़धड़।

(viii) **संज्ञा और विशेषण के योग से**- एक साथ, एक बार, दो बार।

(ix) **अव्यय और दूसरे शब्दों के मेल से**- प्रतिदिन, यथाक्रम, अनजाने, आजन्म।

(x) **पूर्वकालिक कृदन्त और विशेषण के मेल से**- विशेषकर, बहुतकर, मुख्यकर, एक-एककर।

(iii) **स्थानीय क्रियाविशेषण**- ऐसे क्रियाविशेषण, जो बिना रूपान्तर के किसी विशेष स्थान में आते हैं, 'स्थानीय क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- वह अपना सिर पढ़ेगा।

वह दौड़कर चलते हैं।
